Consultation on

Disaster Risk Reduction & Humanitarian Response

March 18, 2010

Venue : **Hotel Clarks Inn Grand, Gorakhpur**

Supported by :
Oxfam India, Lucknow

Organized by :
Gorakhpur Environmental Action Group

AGENDA

Time	Activity
10.00 - 10.15 Hrs.	Introduction
10.00 - 10.45 Hrs.	Work of the last 2 Yerar- 2008-10
10.45 - 01.30	Partner Presentations
	Gorakhpur Environmental Action Group (GEAG)
	Purvanchal Grameen Vikas Sansthan (PGVS)
	Parmarth Samaj Seve Sansthan (PGSS)
	Samarpan Jan Kalyan Samiti (SJKS)
	PANI
	Grameen Development Services (GDS)
	Sahyog Network
	Aapda Nivarak Manch
	Lunch
14.30-15.30	**Open House**
15.30- 16.00	Summary and Wrap-up

Disaster Risk Reduction and Humanitarian Response

-Workshop Report-

18 March 2010

रजिस्ट्रेशन का प्रारम्भ करते हुए डा0 शीराज़ वजीह ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यशाला के उद्देश्यों के स्पष्टीकरण हेतु श्री दीपांकर (आक्सफॉम इण्डिया) से अनुरोध किया।

कार्यशाला का उद्देश्य

उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए दीपांकर जी ने बताया कि पिछले दो वर्षों में यह आपदा जोखिम न्यूनीकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसमें हमारी उपलब्धियां क्या रही हैं तथा आगे इसको किस प्रकार लेकर चलना होगा यह तय करना है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आक्सफॉम इण्डिया किस प्रकार पार्टनर्स के साथ संयोजन करें इसकी भूमिका क्या होनी चाहिए, इस संदर्भ में आप सबकी अपेक्षाएं क्या है यह भी जानन आवश्यक है। अतः इन विषयों पर विस्तार से चर्चा करके एक ठोस निष्कर्ष निकाला जा सके, यही आज की कार्यशाला का उद्देश्य है।

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप की प्रस्तुति

एजेण्डा के अनुसार इसके बाद सभी पार्टनर संस्थाओं ने अपने कार्यो का प्रस्तुतीकरण किया। सर्वप्रथम बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र पूर्वी उ0प्र0 में कार्यरत संस्था गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप के डा0 शीराज़ वजीह ने प्रस्तुतीकरण किया। आपदा की जगह उन्होंने बहु आपदा की बात की। इस क्षेत्र में बाढ़, जल जमाव व जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक छोटी–बड़ी आपदाए आती रहती है। उन सबके संदर्भ में न्यूनीकरण हेतु सोचना होगा। इसमें तीन प्रमुख बिन्दुओं पर कार्य किया गया–

- विपरीत परिस्थितियों में प्रतिक्रिया
- पुर्नपूर्ति (रिकवरी)
- अनुकूलन

इन तीनों में सामंजस्य बिठाकर चलना होगा तभी सही क्रियान्वयन किया जा सकता है। मुख्य रूप से जो गतिविधियां इस संदर्भ में की गई वह निम्न थी–

तैयारी हेतु : क्षमता वृद्धि, जागरूकता, अनाज बैंक, बीज बैंक, टीकारण, हैण्डपम्प को ऊंचा करना, लिंक रोड, जल–स्वच्छता आदि

पुनर्पूर्ति हेतु : कृषिगत व अन्य गतिविधियां (नर्सरी, सब्जी उत्पादन, कम्पोस्टिंग, मुर्गीपालन आदि) ऋण, जल बहाव की स्थितियों को सही करना।

अनुकूलन हेतु : कृषि में स्थान प्रबन्धन हेतु मल्टीटायर, मनरेगा व पी0डी0एस0 से जुड़ाव, कम लागत स्थाई कृषि से जुड़ाव

इसके लिए ग्राम स्तर पर स्वनियोजित संस्थान जैसे स्वयं सहायता समूह व ग्राम स्तरीय सूचना संसाधन केन्द्र आदि से जुड़ाव किया गया तथा पंचायतों, सरकारी विभागों आदि को प्रभावित कर एडवोकेसी की गई। सरकारी विभागों व मनरेगा जैसे स्कीमों से अच्छा जुड़ाव हुआ है। 462 लोगों का स्वास्थ्य बीमा हुआ है। कार्यो का परिणाम यदि देखें तो 7 लोग जो पलायन कर चुके थे, वापिस आकर अपनी खेती कर रहे हैं इससे लगता है कि आगे और सकारात्मक परिणाम दिखेंगे।

पूर्वांचल ग्रामीण विकास संस्थान की प्रस्तुति

इसके उपरान्त बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र की दूसरी संस्था पूर्वांचल ग्रामीण विकास संस्थान के डा0 भानु ने अपना प्रस्तुतीकरण किया। आपदा के जोखिम को कम करने के लिए मुख्य रूप से निम्न गतिविधियां की गई–

- 10 गाँवों का कॉन्टिजेन्सी प्लान बनाया गया।
- अनेक सरकारी विभागों से जुड़ाव किया गया।
- पंचायत द्वारा एक नई बोट खरीदी गयी।
- 10 मॉडल किसानों को मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित किया गया।
- 37 प्रशिक्षित टास्क फोर्स संस्थाओं को इमरजेन्सी हेतु तैयार किया गया।
- ग्राम स्तरीय संस्थान 'वासुदेव' के 132 स्वैच्छिक सदस्यों को एडवोकेसी व जागरूकता के मुद्दों को बढ़ावा देने हेतु तैयार किया गया।
- सरकार के जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम में जोखिम न्यूनीकरण को मापने हेतु उपकरणों व निर्देशों को तैयार किया गया।
- प्रभावी प्रतिक्रिया हेतु अनेक तैयारियां की गई जैसे– हैण्डपम्प को ऊंचा करना, टॉयलेट को ऊँचा करना, संसाधन केन्द्र निर्मित करना, इमरजेन्सी दवा, आदि।
- आपदा न्यूनीकरण हेतु समुदाय में बीमा सम्बन्धी जागरूकता की गई।

इसके उपरान्त सूखा ग्रस्त क्षेत्रों हेतु चयनित संस्था परमार्थ ने अपने कार्यो व उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण किया।

संस्था द्वारा किये गर्यो कार्यो की उपलब्धियां इस प्रकार थी–

- समुदाय को आपदा प्रबन्धन पर जागरूक किया गया और वे अनुकूलन की गतिविधियों से जुड़े।
- महिलाओं और पंचायत के सदस्यों का क्षमतावर्द्धन किया गया जिससे वह सूखे के जोखिम से निपट सके।
- अनाज बैंक, बीज बैंक और ग्राम आपदा कोष से 324 परिवार लाभान्वित हुए।
- 314 किसानों ने सूखा जोखिम न्यूनीकरण गतिविधियों को अपनाया।
- सरकारी विभागों व बीमा कम्पनियों से जुड़ाव
- नरेगा में महिलाओं की भागीदारी हेतु जिला स्तरीय कैम्पेन चलाया गया।
- 60 लाख से अधिक रूपया, नरेगा व अन्य सरकारी योजनाओं द्वारा उपयोग में लाया गया।
- 10 पंचायतों में नरेगा व अन्य विकास कार्यक्रमों में ट्रान्सपरेन्सी (हिन्दी) लाने हेतु सोशल ऑडिट अभ्यास लागू किया गया।

समर्पण जन कल्याण समिति की प्रस्तुति

इसके उपरान्त सूखा ग्रस्त क्षेत्र के दूसरे चयनित संस्थान समर्पण जन कल्याण समिति के श्री राधे कृष्ण ने प्रस्तुतीकरण किया।

परियोजना प्रभाव

- समाज के अधिवंचित सर्वाधिक गरीब, महिलाओं, मजदूर व किसानों की सोच व दृष्टिकोण में बदलाव आया है।
- जलवायु परिवर्तन को दृष्टिगत करते हुए प्राकृतिक संसाधन जल, मिट्टी, वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु परम्परागत कृषि का पुनर्चलन किया जिसका प्रभाव आस–पास के गाँव के लोगों पर पड़ा।
- संगठनों ने ग्राम स्तर से जिला स्तर पर जन दबाव बनाकर गरीब महिलाओं के लिए चलायी जा रही योजनाओं का लाभ प्राप्त किया।
- पंचायत एवं प्रशासन को जबावदेह एवं पारदर्शी बनाने हेतु अभियान की शुरूआत संगठनों द्वारा की जाने लगी।
- पंचायत स्तरीय माइक्रो प्लान बनाने व संचालन निगरानी में बहिष्कृत समुदाय विशेषकर अनु0 जाति व महिलाओं की सहभागिता व नेतृत्व सुनिश्चित कराने हेतु जन पहल/दबाव
- समुदाय आधारित आपदा कोषों का गठन व संचालन
- समान सोच व कार्य करने वाले अन्य स्वैच्छिक सरकारी, गैर सरकारी संगठनों व जन संगठनों के बीच अन्य मुद्दों के साथ जिला व प्रदेश स्तर पर पैरवी हेतु जुड़ाव

उपलब्धियाँ

- 49 महिला समूह, 15 किशोरी मण्डल, 15 किसान संगठन बनाये गये।
- 515 गरीब परिवारों के जॉब कार्ड बनवाकर नरेगा से जोड़ा गया।
- 1380 परिवारों को 66,11,500 रूपये की मजदूरी नरेगा अन्तर्गत परियोजना पहल से प्राप्त हुई।
- 251 परिवारों को वृद्धा पेंशन स्वीकृत करवा कर 9,03,600.00 रूपये की वार्षिक आय सुनिश्चित करायी गई।
- 102 परिवारों को विधवा पेंशन योजना से जुड़वाकर 3,67,200 की वार्षिक सहयोग सुनिश्चित कराया गया।
- 26 विकलांगों को 93,600 रूपये का वार्षिक सहयोग पेंशन द्वारा।
- 144 महिलाओं को जननी सुरक्षा का लाभ 2,04,800 रूपये का दिलाया गया।
- 74 गरीब परिवारों को आवास योजनान्तर्गत 21,46,000 रूपये का लाभ दिलाया गया।
- 39 गरीब परिवारों के खेतों की सिंचाई व्यवस्था परियोजना द्वारा 60 प्रतिशत सहयोग से सुनिश्चित करायी गई।
- 173 परिवारों ने 15.95 कुन्तल अनाज से आपदा कोष स्थापित किया।
- आर्टीजन बैल से बेकार बह रहे 99,64,31,040 लीटर पानी को बहने से बचाया गया।
- 28 लघु सीमान्त कृषकों को परियोजना पहल से 28 स्प्रिंक्लर सेट (मूल्य 14,76,636 रूपये) का लाभ दिलाया गया।
- 55 प्रतिशत परिवारों की आपदा प्रबन्धन की सीख विकसित हुई।
- 241 किसानों ने जलवायु परिवर्तन के आधार पर कम पानी वाली फसलों को अपनाया, जिसमें अरहर–65 बीघा, चना–68, मसूर 109, सेंहुआ 44, बेझर, 19 बीघा में मिश्रित खेती की।
- 47000 मीटर मेड़बन्दी का कार्य पंचायत एवं भूमि संरक्षण विभाग से लाइजनिंग कर 205 परिवारों के खेतों में 7,99.000 मूल्य का कार्य कराया गया।

पानी संस्थान की प्रस्तुति

इसके उपरान्त पानी सस्थान फैजाबाद के श्री भारत भूषण ने अपना प्रस्तुतीकरण दिया। अपने कार्य क्षेत्र बाराबंकी में उन्होंने हर पंचायत पर अनाज बैंक व बीज बैंक का निर्माण समुदाय के सहयोग से कराया है। आर्थिक सशक्तीकरण हेतु उस क्षेत्र क किसाना के दुग्ध उत्पादन कार्य को पराग डेरी से जुड़वाया गया जिससे उन्हें उचित मूल्य प्राप्त हो सके। नरेगा के तहत जमीन को उँचा उठाने का कार्य किया गया है।

आपदा के लिए रिवाल्विंग फण्ड की व्यवस्था की गई जिसका समुदाय ने बहुत अच्छी तरह उपयोग किया और 600 परिवारों को इससे लाभ पहुँचा।

सहयोग नेटवर्क की प्रस्तुति

इसके उपरान्त 'सहयोग' नेटवर्क से डा0 बी0सी0 श्रीवास्तव व श्री ध्रुव कुमार ने प्रस्तुतीकरण दिया। विगत समय में सहयोग द्वारा की गई प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार रही–

- नहर यात्रा
- क्षमता वर्द्धन
- आक्सफॉम के सहयोग से सदस्यों को फेलोशिप
- अध्ययन व रिसर्च

सहयोग द्वारा आपदा प्रबन्धन व स्थितियों पर विगत वर्षों में कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन निकाले गये जो निम्न थे–

- महाव के बहाने
- पूर्वी उत्तर प्रदेश, जल जमाव एवं आजीविका को संकट
- पूर्वी उत्तर प्रदेश, जल जमाव एवं किसानों का संकट
- पूर्वांचल की बाढ़ व्यथा
- बाढ़ प्रबन्धन पर पक्ष पोषण

सहयोग द्वारा आपदा सम्बन्धी विषयों पर आधारित एक न्यूजलेटर निकालने का कार्य भी प्रारम्भ किया गया जिसके विगत दो अंक इस प्रकार रहे–

प्रथम अंक :

- मिला एक लाख का चेक
- आग से नुकसान की भरपाई
- नदी में विलीन मकानों का पूरा मुआवजा नहीं मिला
- बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली नयी राहत दरें

द्वितीय अंक :

- पूर्वी उ0प्र0 में बाढ़, जल–जमाव व खेती का संकट
- जल जमाव के क्षेत्र में परवल की सफल खेती
- बाढ़ के बाद नकदी फसल ने दी राहत
- जल जमाव के खेत में मिश्रित व अन्तः फसल से आजीविका
- आपदा के क्षेत्र में आजीविका के कुछ अन्य विकल्प

समय–समय पर अनेक प्रशिक्षणों व कार्यशालाओं द्वारा क्षमता वर्द्धन का कार्य भी किया जाता रहा। साधारण सभा व गवर्निंग बोर्ड की बैठके नियमित होती रहीं।

एक महत्वपूर्ण गतिविधि के तहत पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में कॉन्टीजेन्सी प्लान का अध्ययन व विश्लेषण किया गया। सभी जिलों से कुल 110 केस स्टडी चयनित की गई जिसको दस्तावेजीकरण करके अन्य जगहों पर आदान–प्रदान किया जायेगा।

आपदा निवारक मंच के श्री ध्रुव कुमार ने अपने प्रस्तुतीकरण में कहा कि आपदा क्षेत्र को ग्राम स्तरीय सीमांकन में न बांध कर क्षेत्रीय सीमांकन में बांधने की आवश्यकता है। जिससे उस पूरे क्षेत्र को प्राकृतिक आपदा से बचाया जा सके। सहयोग की योजनाओं में विकास व आपदा को एक साथ लेकर चलना चाहिए। जिलास्तरीय contengency planning होनी चाहिए। इसमें फसल बीमा, आपदा बीमा आदि महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

खुली चर्चा

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त आगे की योजना व दिशा हेतु एक खुली चर्चा हुई जिसमें दीपांकर जी ने ऑक्सफाम का पक्ष रखा। उनका कहना था कि समुदाय को आपदा से निपटने के तौर तरीकों पर प्रशिक्षित करने के बाद यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह बातें व्यवहार में आ जायें फिर उन्हें छोड़ देना चाहिए।

क्षेत्र से निकले सफलता की कहानियों और सीख को आक्सफॉम बड़े स्तर पर ले जाकर अन्य लोगों के साथ बांटेगा। सभी ने यह तय किया कि आगे आक्सफॉम यदि आपदा और विकास को एक साथ जोड़कर देखे तो ज्यादा सफलता मिल सकती है। योजनाएं लम्बे समय के लिए बननी चाहिए। अल्पकालिक योजनाओं से सशक्तीकरण लाना संभव नहीं होता। पब्लिक पॉलिसी की बात करनी चाहिए जिससे समुदाय का वास्तविक हित हो सके और इसके लिए समुदाय के जीवनयापन को केन्द्र बिन्दु बनाकर चलना आवश्यक होगा तभी सही दिशा में सार्थक प्रयास हो सकेगा।

डा0 शीराज़ वजीह ने सभी उपस्थित लोगों को धन्यवाद देकर कार्यशाला का समापन किया।

प्रतिभागियों की सूची

1. श्री दीपांकर
   आक्सफॉम इण्डिया, लखनऊ

2. डा0 बी0सी0 श्रीवास्तव
   सहयोग नेटवर्क, शोहरतगढ़

3. डा0 भानु
   पूर्वांचल ग्रामीण विकास संस्थान, गोरखपुर

4. श्री अनिल कुमार सिंह
   परमार्थ, उरई, जालौन

5. राधे किशोर
   समर्पण जन कल्याण समिति, कोंच, जालौन

6. श्री भारत भूषण
   पानी, फैजाबाद

7. श्री ध्रुव कुमार
   पंचशील डेवलपमेन्ट ट्रस्ट, बहराईच

8. डा0 शीराज़ वजीह
   गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, गोरखपुर

9. डा0 सीमा त्रिपाठी
   गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, गोरखपुर

10. श्री हरबिन्द श्रीवास्तव
    गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, गोरखपुर

****